पंत के छायावादी काव्य में सौंदर्य–बोध

डॉ. आर.पी. वर्मा,
एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

नवीन शताब्दी में सभ्यता के चरण विकास पा रहे है। इस वैज्ञानिक युग का यंत्र मानव आज जहाँ–तक पहुँच गया है, वहाँ से उसका पीछे लौटना नामुमकिन है। आज उसके ऊपर खुला आकाश है, फिर भी वह निर्द्वंद्व विचरण नहीं कर पा रहा है, झर–झर झरते झरने एवं कल–कल बहती नदियाँ हैं, जिनका आनंद लेने में वह असमर्थ है। कहीं इसका कारण वह स्वयं तो नहीं। आज की परिस्थितियों में उसे आनंद मिलता नहीं, प्राप्त करना पड़ता है। विज्ञान खरगोश की तरह कितना भी दौड़ ले, किंतु साहित्य रूपी कछुए से उसकी सदैव हार होती रहेगी। विज्ञान साधन दे सकता है, शांति नहीं। किसी ने खूब कहा है:–

झक झोली में फूल भरे हैं इस झोली में काँटे रे

कोई तो कारण होगा।

तेरे बस में कुछ भी नहीं है बाँटने वाला बँट रे

कोई तो कारण होगा।

साहित्य मानव की जीवन–रूपी झोली में फूल भरता है तो विज्ञान काँटे। अब यह मनुष्य को सोचना है कि उसे क्या चाहिए। आज विज्ञान को साहित्य से अलग करके नहीं, जोड़कर देखने की आवश्यकता पड़ गई है। साहित्य मात्र साहित्यकारों की अभिव्यक्ति नहीं, वह एक ऐसा व्यापक क्षितिज है, जिसमें हर मानव अपनी आस्था और अस्तित्व ढूँढ़ सकता है। साहित्य को अपने मन में उतारनेवाले व्यक्ति की चेतना में अनगिनत डूबते–उतरते भाव होते हैं, जो उसे चैन नहीं लेने देते हैं। चारों ओर घटित होनेवाली घटनाएँ एवं परिस्थितियाँ अनजाने ही चेतना में एक आक्रोश जगाती हैं और मन स्वयं ही पूछ बैठता है कि आखिर ऐसा क्यो? इसी 'क्यों' को खोजता है सौंदर्य–दृष्टि। आनंद देना नहीं, बल्कि चेतना जाग्रत् करने का नाम है सौंदर्य।

छायावादी काव्य रोमांटिक काव्य है। इस काल के कवि और उनकी कविता पाश्चात्य सौंदर्य–चिंतन के अधिक निकट रही है। पंत जी ने तो स्पष्ट लिखा है कि 'द्विवेदी–युग के काव्य की तुलना में छायावाद इसलिए आधुनिक था कि उसके सौंदर्य बोध और कल्पना में पाश्चात्य साहित्य का पर्याप्त प्रभाव पड़ गया था।

कविवर पंत की कविताओं में भारतीय संगीतशास्त्र के अनेक पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त हुए हैं। गुंजन काव्य में कवि की यह प्रतिभा देखी जा सकती है। 'गुंजन' के भाषा–संगीत में एक सुंदरता, मधुरता देखी जा सकती है। स्वयं पंत जी ने कहा है, गुंजन के संगीत मे एकता है, पल्लव के स्वरों में बहुलता। पंत का वर्ण–संगीत कालिदास के वर्ण–संगीत से काफी मिलता है। पंत काव्य का सौंदर्य विराट् चेतनपा से अनुप्राणित है। सौंदर्य एक विलक्षण अनुभूति है, जिसका आनंद भी विलक्षण होता है। किसी कवि की अनुभूतियों में सुरक्षित अमूर्त भाव जब प्रत्यक्षीकरणों के माध्यम से मूर्त होने लगते हैं, तभी सांसारिक उपादानों की आवश्यकता होती

है। पूर्णरूपेण साहित्य को समर्पित कवि पंत के संपूर्ण काव्य–संसार को छायावादी काव्य, प्रगतिवादी काव्य तथा नवचेतनावादी काव्य मे देखा जा सकता है। पंत के तीन धाराओं छायावादी काव्य में वस्तु और शिल्प–सौन्दर्य का अनूठा संगम देखा जा सकता है। 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन', 'ज्योत्सना' जैसी रचनाएँ सौंदर्य के विराट् रूप को व्यक्त करती हैं। पंत ने अपने पूर्व काव्य की प्रवृत्तियों को अधिक परिष्कृत कर अपनी कविता के स्वरूप को सौंदर्यमय बनाया। नवीन अभिव्यंजना–पद्धति एवं जीवन के सूक्ष्मतम मूल्यो की प्रतिष्ठा ने त की कविता को नवीन सौंदर्य चेतना प्रदान की। कवि के छायावती काव्य सौंदर्य अपनी पूर्ण कला के साथ उदित हुआ। मानव–सौंदर्य, प्रकृति सौंदर्य, भाव–सौंदर्य, अंतर्जगत् का सौंदर्य, सूक्ष्य–सौंदर्य, नारी–सौंदर्य एवं स्थूल–सौंदर्य– सभी को एक साथ मिलाकर कवि ने महासौंदर्य की एक दृष्टि दी। छायावाद की एक विशेषता रहस्यवादी भावना रही है पत की छायावादी काव्यों में रहस्यात्मक भावना प्रकृति के माध्यम से व्यक्त हुई है। पल्लव की मौन–निमंत्रण कविता में उत्कृष्ट कोटि का रहस्यात्मक सौंदर्य है। कवि को मौन निमंत्रण देनेवाला और कोई नहीं, अव्यक्त सत्ता ही है:–

स्तब्ध–ज्योत्स्ना में जब संसार

चकित रहता शिशु–सा नादन

विश्व के पलकों पर सुकुमार

विचरते हैं जब स्वप्न अजान

न जाने नक्षत्रों से कौन

निमंत्रण देता मुझको मौन।

(पल्लव)

कवि का आध्यात्मिक विश्वास उत्तरोत्तर पुष्ट होता गया और इसी विश्वास को कवि ने जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए शक्ति–रूप में प्रस्तुत किया।

माँ, शब्द में विराट् सौंदर्य समाया है। कवि माँ के चरणों में अपना अस्तित्व मिटाने की चाह रखते हुए कहते है :–

माँ तेरे प्रिय पद–पद्यों में

अर्पण जीवन को कर दूँ।

(वीणा)

इस आत्मनिवेदन के भाव में ईश्वर के प्रति आत्मोत्सर्ग का सौंदर्य देखा जा सकता है। विश्वात्मा अंधकार के बादल हटाकर मानव को ज्ञान एवं बल प्रदान करती है। कवि पंत का काव्यादर्श सौदर्य पर टिका है यही कारण है कि उनकी कविताओं में सौंदर्य7भाव बिखरे पड़े है। उच्छ्वास ग्रथि, पल्लव एव गुजन मे कवि ह्रदय ग्राही सौंदर्य की सृष्टि करते है कवि की यह सौदर्य दृष्टि एकांगी न होकर लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण है। कवि की दृष्टि में सौंदर्य जीवन की समस्त श्री एवं ऐश्वर्य का केन्द्र है–

अकेली सुदरता कल्याणी सफल ऐश्वर्यों की

संधान।

(पल्लव)

नारी के रूप सौंदर्य का वर्णन कवि की रचनाओं में बिखरा पड़ा है–

इंद्रलोक में पुलक–नृत्य तुम करती लघु–पद–भार

ताड़ित चकित चितवन से चंचल कर सुर–समा

अपार।

(गुंजन)

कवि की सौंदर्य–संबंधी भावना पूर्ण उदात्त एवं प्रौढ़ है। वेदनाभाव में पंत बेजोड़ हैं, उनकी दृष्टि

से कविता और कुछ नहीं, आह से उपजा गीत है –

वियोगी होगा पहला कवि

आह से उपजा होगा गान

उमड़कर आँखों से चुपचाप

बही होगी कविता अनजान।

(पल्लव)

यही वेदना कवि हृदय को दिव्य एवं उज्जवल बनाकर उसे जड़ चेतना व्यापी कर देती है ंकवि के वेदना–सौंदर्य मे संतोष, कराह और पीड़ा सभी अनुभूतियाँ एक साथ हैं कवि की इसी वेतन से जुड़ा है प्रणय–भाव। उन्होंने स्त्री पुरूष के सहज प्रणय को विराट् प्रेम से एकीकृत कर दिया है। कवि ने प्रिया के मांसल नहीं, भावात्मक चित्र खींचे है। प्रकृति के सौंदर्य का सजीव चित्रण पंत की विशेषता है। डॉ गोविंदराम शर्मा का माना है कि प्रकृति कवि के रूप में उनकी सर्वाधिक प्रतिष्ठा है।

संदर्भ

- पंत के काव्य में उपादन – डॉ0 आर0पी0 वर्मा
- हिन्दी साहित्य के इतिहास –आचार्य राम चन्द्र शुक्ल
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास–बच्च सिंह